राष्ट्रीय सेवा योजना

National Service Scheme (NSS)

युवा छात्र–छात्राओं में शिक्षा ग्रहण करने के दौरान उनके व्यक्तित्व निर्माण, समाज एवं राष्ट्र सेवा भाव विकसित करने हेतु भारत सरकार द्वारा 24 दिसम्बर, 1969 को राष्ट्रीय सेवा योजना की स्थापना की गई। इस योजना में 37 विश्वविद्यालयों के 40,000 विद्यार्थी सम्मिलित हुए। भारत सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने मूल्यांकन कर 30 मार्च 1987 में राष्ट्रीय सेवा योजना को स्थायी योजना घोषित किया। वर्तमान में राष्ट्रीय सेवा योजना में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, पालिटेक्निक संस्थानों एवं माध्यमिक विद्यालयों में लागू की जा रही है। राष्ट्रीय सेवा योजना का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में व्यक्तित्व को इस तरह से निखारना है ताकि उनमें सहिष्णुता, सहभागिता, सेवा भाव, स्वालम्बन एवं स्वदेश–प्रेम के गुणों को समाहित किया जा सके। स्वयंसेवी परिवार एवं समाज की कठिनाइयों एवं आवश्यकताओं से अवगत हुए समूह में रहकर अपना व्यक्तित्व विकास कर सकें। युवाओं में प्रजातांत्रिक अभिवृत्ति हेतु नेतृत्व के गुणों को धारण कर व्यक्ति एवं समाज की व्यावहारिक कठिनाइयों के समाहित में अपनी भूमिका अदा करने में सक्षम हो सकें। युवाओं की भूमिका स्वास्थ्य, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण तथा दैवीय आपदाओं के परिपेक्ष में महत्वपूर्ण हैं। इन समस्याओं के समाधान हेतु युवाओं के दृष्टिकोण, क्षमता एवं व्यक्तित्व विकास में बदलाव अति आवश्यक है। राष्ट्रीय सेवा योजना में मात्र प्रमाण–पत्र अर्जित करना ही इसके उद्देश्य नहीं होना चाहिए। राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु स्वयंसेवकों, कार्यक्रम अधिकारियों एवं संस्था के प्रशासनिक प्रणाली की सक्रिय सहभागिता एवं क्रियाशीलता में किसी तरह का व्यवधान नहीं आना चाहिए।

राष्ट्रीय सेवा योजना का सिद्धांत वाक्य **मैं नहीं परंतु आप (Not me But you)**है। इसका प्रतीक चिह्न युवाओं को अपने लक्ष्य एवं कर्तव्यों का आभास दिलाता है। युवा स्वयंसेवकों को उसके अनुरूप कार्यशील रहकर अपने व्यक्तित्व विकास करते हुए समाज व राष्ट्र सेवा का पूरे उत्साह, सक्रियता एवं स्फूर्ति के साथ मानव कल्याण एवं मातृभूमि की रक्षा को सर्वोपरि रखा है। इसके लिए युवाओं को अपने आसपास के क्षेत्र में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग इस तरह से करना होगा, जिससे पर्यावरण में हो रहे बदलाव को कम किया जा सके तथा प्रकृति एवं पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित रह सके।

राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों हेतु प्रत्येक वर्ष–**'बी'** एवं **'सी'** प्रमाण–पत्र परीक्षा आयोजित की जाती है। उक्त प्रमाण पत्रों का बी0टी0सी0 आदि के प्रवेश में अधिमान दिया जाता है। स्वयं सेवकों को 'बी' एवं 'सी' के प्रमाण–पत्रों हेतु दो वर्ष पंजीकृत रहते हुए पाँच एक दिवसीय शिविर तथा कम से कम एक सात दिवसीय विशेष शिविर करना अनिवार्य होता है। अन्य विवरण निम्नत् हैं–

1. कुमाऊँ विश्वविद्यालय में पंजीकृत स्वयं सेवकों की कुल संख्या – 9664
2. राष्ट्रीय सेवा योजना से आच्छादित संस्थाओं की संख्या –47
3. सत्र 2011–12 में आयोजित रक्तदान शिविरों की संख्या –25
   (शिविरों में 1498 यूनिट रक्त स्वयं सेवकों, कार्यक्रम अधिकारियों, सामाजिक–राजनैतिक कार्यकर्ताओं द्वारा दान किया गया।)

4. भारत वर्ष में कार्यक्रम अधिकारियों के क्षमताविकास हेतु विभिन्न राज्यों में 13 उन्नयन प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किए गए हैं। उत्तराखंड राज्य हेतु कुमाऊँ विश्वविद्यालय में स्थापित इस प्रशिक्षण संस्थान

द्वारा 04 प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जा चुके हैं, जिसमें 152 कार्यक्रम अधिकारियों को प्रशिक्षत किया जा चुका है।

5. **'बी'** एवं **'सी'** प्रमाण–पत्र परीक्षा कार्यक्रम विधिवत् रूप से संचालित किया जा रहा है।
6. 'जलवायु परिवर्तन'' विषय संदर्भित 02 दिवसीय कार्याशाला (28 व 29 मार्च 2012) द्वारा कुमाऊँ विश्वविद्यालय के कार्यक्रम अधिकारियों को UCOST देहरादून वं जलवायु परिवर्तन अध्ययन केंद्र, कुमाऊँ विश्वविद्यालय परिसर, अल्मोड़ा द्वारा प्रशिक्षित किया गया है।
7. समस्त इकाइयों में ''स्पर्श गंगा कार्यक्रम'', ''आपदा प्रबंधन'' एवं ''रेड रिबन कार्यक्रम'' पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं।
8. राष्ट्रीय स्तर से संचालित शैक्षिक, स्वास्थ्य एवं सामाजिक उत्थान के कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता की गई है।
9. सत्र 2012–13 में स्नातक स्तर की कक्षाओं में प्रवेश के साथ राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष में प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ की जाएगी।
10. एन0एस0एस0 कार्यक्रम को जन–जन तक पहुँचाने हेतु दिनांक 23–06–2012 का कुमाऊँ विश्वविद्यालय की बेबसाइट प्रारम्भ की गयी है– (www.kunss.in).

राष्ट्रीय सेवा योजना डी0एस0बी0 परिसर, नैनीताल की उपलब्धि।

1. 16 दिसम्बर, 2012 स्पर्श गंगा के दिवस के पूर्व अवसर पर नैनीताल शहर में एक जनजागरण रैली।
2. 17 दिसम्बर, 2012 स्पर्श गंगा दिवस पर 10 कुंतल कूड़ा निस्तारण तथा झील की सफाई की गई।
3. 16 मार्च, 2010 को स्वयंसेवकों द्वारा रक्तदान का संकल्प किया गया।
4. वर्ष 2010–2011 में पॉच एक दिवसीय शिविर क्रमशः दिनांक 14, 21, 28 नवम्बर, 2010, 01, 17 दिसम्बर, 2010।
5. सात दिवसीय विशेष शिविर दिनांक; 24 दिसम्बर, 2010 से 30 दिसम्बर, 2010 में आयोजित किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई डी0एस0बी0 परिसर, नैनीताल में वर्तमान में चार इकाई कार्यरत हैं। कार्यरत इकाई क्रमशः 070(वसुन्धरा), 071, 072, 073(प्रेरण), 074 (विवेकानंद) है।

जिसमें कुल 400 विद्यार्थी स्वयंसेवक के रूप में पंजीकृत हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्यों के क्रियान्वयन में सव्यंसेवकों द्वारा साक्षरता, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य सुधार, समाजसेवा, साम्प्रदायिक एकता, प्राकृतिक आपदा, रक्तदान एड्स जागरूकता, वृक्षारोपण, स्पर्श गंगा, पल्स पोलियो आदि गतिविधियों द्वारा स्वयंसेवकों द्वारा प्रतिभाग किया जाता है।

वर्ष 2012–13 में कुमाऊँ विश्वविद्यालय, डी0एस0बी0 परिसर, नैनीताल के कार्यक्रम अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा समय–समय पर संचालित गतिविधियों में सहयोग दिया गया। प्रभारी/वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी के रूप में डॉ0 एस0एन0 लाला ने सहयोग किया। कार्यक्रम अधिकारी डॉ0 मनोज कुमार, डॉ0 हरिप्रिया पाठक तथा सुहेल जावेद, इसके अतिरिक्त श्री शेरसिंह बिष्ट, श्री लक्ष्मण सिंह, श्री बहादुर सिंह रौतेला, श्री बलवंत सिंह मेहता, श्री नरोत्तम बहुगुणा, श्री प्रतापसिंह तथा परिसर के समस्त शिक्षकों एवं कर्मचारियों का परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से सहयोग दिया। माननीय कुलपति कुमाऊँ विश्वविद्याल, नैनीताल एवं निदेशक के दिशा निर्देशन एवं सहयोग दिशा निर्देश के बिना राष्ट्रीय सेवा योजना के गतिविधियों के सफल संचालन संभव नही हो सकता है।

कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल के परिसर अल्मोड़ा में सत्र 2012–2013 में पांच इकाइयॉ संचालित की गयी, विभिन्न इकाइयों में राष्ट्रीयस्तर से निर्देशित सामुदायिक विकास के कार्यक्रमों का संचालन नियमित एवं एक दिवसीय कार्यक्रमों में किया गया है। इंटर कॉलेज दौलाघाट तथा बाड़ेछीना में सात दिवसीय शिविरों का आयोजन किया गया है। रक्त दान शिविर, स्पर्शगंगा कार्यक्रम जलवायु परिवर्तन, कन्या भ्रूण हत्या, रेड रिबन क्लब के साथ–साथ व्यक्तित्व विकास के विविध कार्यक्रमों को आयोजित किया गया है। सत्र 2012–13 में कौशल विकास कार्यक्रमों में स्वयं सेवकों को सम्मिलित किया जायेगा। परिसर में प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ होने के साथ राष्ट्रीय सेवा योजना की विभिन्न इकाइयों में पंजीकरण प्रारम्भ किया जायेगा। प्रवेश हेतु प्रो0 विजया रानी ढौडियाल, वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी, राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यालय, परिसर अल्मोड़ा से संपर्क किया जा सकता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना परिसर, अल्मोड़ा द्वारा सत्र 2012–13 में Help Line प्रारंभ की गई है। नए छात्र–छात्राओं ने इस सेवा का भरपूर लाभ उठाया गया है। सत्र के मध्य में Help Line ने व्यक्तिगत, व्यावसायिक एवं शैक्षिक परामर्श सेवा भी प्रदान की गई है।

विश्वविद्यालय से संदर्भित सूचनाओं हेतु सम्पर्क–

Professor Atul Joshi, Cell phone no. 9412327702

राष्ट्रीय सेवा योजना का सिद्धांत वाक्यः ***'मैं नहीं परंतु आप' (NOT ME BUT YOU).***